छायावाद(१९१८ से १९३६ तक) की प्रमुख प्रवृतियां

प्रस्तुतकर्ता -

ओम प्रकाश रविदास

PPT for Syllabus 2018 CBCS Sem:-V (G) paper DSE 1 "Chhayavad" entitled as "Chhayavad ki Pramukh pravrittiyan"

dated:- 04/08/2020

भुमिका

- छायावाद का नामकरण करने का श्रेय मुकुटधर पाण्डेय को जाता है।
- मुकुटधर पांडे द्वारा शारदा पत्रिका मे एक निबंध प्रकाशित की गई जिसमें पहली बार उन्होंने ‘छायावाद’ शब्द का प्रयोग किया।
- आत्माभिव्यक्ति की भावना , रूढ़ियों से मुक्ति , रहस्यवाद , नारी प्रेम , प्रकृति प्रेम , राष्ट्रीय भावना आदि छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता हैं।
- जिस समय देश स्वतंत्रता संग्राम की आग में जल रहा था ,ऐसे समय में छायावादी कवियों पर व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का रोना रोने का आरोप भी लगा।

१ आत्माभिव्यक्ति की भावना

- छायावादी कविता दिवेदीयुगीन कविता के प्रतिक्रिया के रूप में सामने आई। ।
- छायावादी कवियों ने दिवेदीयुगीन परिपाटी को तोड़कर 'स्व' और 'मै' से संबंधित कविताएं लिखी।
- कविता का प्रमुख विषय अपने व्यक्तिगत सुख-दुःख , अवसाद , पीड़ा , शोक , उतार-चढ़ाव , आशा-निराशा इत्यादि को बनाया।

प्रसाद जी ने लिखा हैं –

मिला कहां वह सुख, जिसका में स्वपन देखकर जाग गया।

आलिंगन तक आते-आते , मुस्कुराकर जो भाग गया।

- छायावादी कवियों की ये भावनाएं उनके व्यक्तिव रोना-धोना से उपर उठकर अन्य के सुख-दुख की अभिव्यक्ति बन गये।

निराला जी ने लिखा हैं-

मैंने मैं शैली अपनाई

देखा एक दुःखी निज भाई

दुख की छाया पड़ी ह्रदय में

झट उमड़ वेदना आई

२ रुढ़ियों से मुक्ति

- अब कविता रीतिकालीन परिपाटी की महल की चार दिवारी को तोड़कर बाहर निकाली।
- छायावादी कवियों ने पोथी नैतिकता,रुढी एवं परंपरा और सामंती संस्कृतियों के मानदंडो का घोर विरोध किया।
- ***निराला जी ने इसी बात को पंचवटी प्रसंग में कहा हैं।***

छोटे से धर की लघु सीमा में
बधे हैं क्षुद्र भाव
प्रेम का पयोनिधितो उमड़ता हैं
सदा ही नि:सीम बीच भू-पर

- ***निराला जी कविता में नवीनता के प्रति बड़े आग्रही हैं–***

नव गति, नव लय, ताल छंद नव
नवल कंठ, नव जलद मन्द्र रव
नव नभ के नव विहग वृंद को,
नव पर नव स्वर दे।

3 रहस्यवाद –

- कुछ सुधी आलोचक रहस्यवाद को छायावाद का प्राण मानते हैं।
- छायावादी कवियों प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ का दर्शन एक अज्ञात सत्ता के अन्दर करते हैं।
- इस कवियों में अंनत के प्रति जिज्ञासु एवं विस्मय का भाव है।
- **प्रेम और वेदना ने महादेवी को रहस्योन्मुख किया-**

"""""*"उस असीम का सुंदर मंदिर, मेरा लधुतम जीवन रे।"*

- **पंत जी की जिज्ञासा तो शिभु सुलभ सरलता समान हैं –**

"प्रथमरश्मि का आना रंगिणि

तुने कैसे पहचाना?

४ नारी के प्रति नवीन भाव-

- छायावादी कवियों ने अब रीतिकालीन नारी वासना को त्यागकर उसमें पाये जाने वाले दया, ममता, समर्पण , सहिष्णुता, प्यार आदि गुणों का अनुसंधान किया।
- अब नारी प्रेयसी, जीवनसहचरी, मां, आदि रूपो में जीवन में उतरी।

- **प्रसाद जी के मतानुसार तो नारी श्रृद्धा हो ।**

नारी तुम केवल श्रद्धा हो

विश्वास– रजत– नग– पगतल मे!

पीयूष– स्त्रीत सी बहा करो

जीवन के सुंदर समतल में

- **छायावादी कवियों ने युगों-युगों से उपेक्षित नारी को सदियों की कारा से मुक्त कराया –**

मुक्त करो नारी को, युग-युग की कारा से बंदिनी नारी को।

- **पंत का नारी के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण रहा है –**

देवी मां सहचरि प्राण

- निराला विधवा को इष्ट देव के मंदिर की पुजा कहते हैं तथा इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती हुई मजदुरनीका चित्र खींचते हैं, जो रीतिकालीन धारणा को तोड़ने वाली हैं।

५ श्रृंगारिकता

- छायावादी काव्यों में श्रृंगार – भावना और उसके साथी उपकरणों पर जैसे नारी, सौंदर्य, प्रेम का चित्रण सुक्ष्म एवं उदान्त ष्य में हुआ हैं,वासना की गंध इसमें बहुत कम है।
- जब मनु पहली बार श्रद्धा को देखते हैं तो उसका सौन्दर्य स्थुल से अधिक भाव रुप में ही भी सामने आता हैं

नील परिधान बीच सुकुमार

खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।

खिला हो ज्यों बिजली का फूल,

मेघ वन बीच गुलाबी रंग।

- छायावादी कवि प्रेम के क्षेत्र में जाति, वर्ण, धर्म, रुढ़ियों, सामाजिक रीतियों के बंधन को छोड़ता हैं।
- **निराला जी लिखते हैं –**

दोनों हम भिन्न वर्ण, भिन्न

जाति , भिन्न रूप

भिन्न धर्म भाव , पर केवल

अपनाव से प्राणों से एक थे।

६प्रकृति-प्रेम

- छायावादी कवियों को अपने आस-पास के जीवन जगत में जकड़न और रूढ़ियों नजर आती थी, प्रकृति उससे स्वतंत्र थी, इसलिए छायावादी कवि भी अपने आप को प्रकृति के समान स्वतंत्र करना चाहते थे।
- छायावादी कवियों ने प्रकृति को अपने मित्र ,सहचर , प्रेयसी, मां, इत्यादि रुप में वर्णित किया।
- **निराला जी ने संध्या का वर्णन कुछ इस प्रकर किया है –**

दिवसावसान का समय

मेघमय आसमान से उतर रही है

- **प्रसाद जी ने प्रकृति का वर्णन कुछ इस प्रकार किया हैं -**

बीती विभावरी जाग री ।

अम्बर पनघट में डुबो रही

तारा-घट ऊषा नागरी!

- **प्रसाद जी अतरिक सौन्दर्य था उद्धारण प्रकृति के माध्यम से करते हैं**

शशि मुखपर घूंघट

डाले, अंचल में दीप छिपाएं

जीवन की गोधूलि में, कौतूहल

से तुम आए,

७ राष्ट्रीय भावना

- राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति छायावादी कवियों में सीधे– सीधे देश- प्रेम की कविताओं के माध्यम से हुईं हैं। प्रसाद जी के नाटकों में इस प्रकार की कविताएं निहित हैं।
- राष्ट्रीय भावना ने छायावादी कवियों को इस प्रकार बांधे हुए था कि उनका व्यक्तिवाद किसी असामाजिक पथ पर भटका नहीं।
- **प्रसाद जी का गीत –**

अरुण यह मधुमय देश हमारा।

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा ।।

- **प्रसाद जी का गीत –**

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से,

प्रबुद्ध शुद्ध भारती।

स्वयंप्रभा समुज्ज्वला,

स्वतंत्रता पुकारती॥

- **स्वतंत्रा आंदोलन को सक्रिय प्रेरणा देने वाला,माखन लाल चतुर्वेदी का यह गीत कुछ इस प्रकार हैं –**

मुझे तोड़ लेना वनमाली!

उस पथ पर देना तुम फेंक,

८मानवतावादी दृष्टिकोण

- इस काव्य पर रविन्द्र, अरविंद, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद के मानवतावादी दृष्टि का विकास हुआ
- यह मानवतावादी नारी के प्रति उच्च भावना, मानव मात्र के प्रति प्रेम, समस्त राष्ट्र के प्रति प्रेम, विश्व के प्रति प्रेम आदि रूप में प्रकट हुआ ।
- **निराला जी 'बादल राग' के माध्यम से शोषित वर्ग के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते हैं-**

चूस लिया है उसका सार,

हाड़-मांस ही है आधार,

९ वेदनाऔर करूणा की निवृत्ति

- छायावादी कविता में वेदना के अभिव्यक्ति करूणा और निराशा के रूप में हुई हैं।
- हृदयगत भावों के अभिव्यक्ति की अपूर्णता, अभिलाषाओं की विफलता, सौंदर्य की नखरता , प्रेयसी की निष्ठुरता , मानवीय दुर्बलताओं के प्रति संवेदनशीलता विभिन्न कारणों से छायावाद काव्यों में वेदना और करूणा की अधिकता पाई जाती है

वियोगी होगा पहला कवि

आह से उपजा होगा गान।

उमड़ कर आँखों से चुपचाप

बही होगी कविता अनजान।

१० कल्पना का महत्व

- छायावादी काव्यों में भागों की अभिव्यक्ति के लिए जीवन और जगत के बारे में कल्पना भरे चित्र बड़ी ही विविधता के साथ सीचे गई है,

- बादलो को इंद्र का अनुचर मानकर उसकी तरह-तरह के कल्पना की गई है-

११ स्वच्छंदतावाद

- छायावादी कवि ने विषय, भाव, कर्ता, धर्म, दर्शन और समाज के सभी क्षेत्रों में स्वच्छंद वादी प्रकृति को अपनाया।
- हालांकि उनके 'मैं' में पुरा समाज शामिल था।

१२ काव्य भाषा

- छायावादी कवियों ने कोमल सरस और सरल शब्दों के चयन की प्रवृति अपनाई –

देख वसुधा का यौवन भार

गूँज उठता है जब मधुमास

छायावादी कवि की पद- रचना पर बंगाल कविता विशेष रूप से रविन्द्र नाथ ठाकुर की पद की रचना का प्रभाव माना गया हैं।

१३ छंद से मुक्ति

- छायावादी कवियों की भावनाओं में जो विशेष्ता थी, उसका प्रभाव उनके काव्य विन्यास और छंद विधान पर भी पड़ा। छायावादी काव्य चुंकि भावावेश का काव्य हैं, इसलिए उनके छदं में प्रगीतमुक्त की प्रधानता हैं। अपनी नवीन भावनाओं के अनुकूल छायावादी कवियों ने नये छंदों की खोज की।

छंद के क्षेत्र में छायावादी का योगदान अभूतपूर्व हैं। इस क्षेत्र में भी प्रत्येक कवि का अपना वैशिष्ट्य हैं।भाव क्षेत्र के तरह इस क्षेत्र में भी सबसे अधिक प्रयोग निराला ने किये हैं।

१४ बिम्ब और प्रतीकः-

- छायावादी कवियों ने अधिकांश बिम्ब प्रकृति, इतिहास,पूराने, धर्म तथा दर्शन आदि से चुने हैं।
- महादेवी के गीतों में प्रकृति से लिए गए प्रतीकों का प्रयोग से लिए गये प्रतीकों का प्रयोग हमें काफी देखने को मिला हैं।दीप,बादल,समीर,बझंझ, फूल ऐसे ही प्रतीक हैं जो हृदय की वेदना,विरह,मितन आदि भावों को व्यक्त करते हैं।

कुछ उपयोगी पुस्तकें-

- छायावादः डॉ नामवर सिंह; राजकमल प्रकाशन; दिल्ली
- छायावादः पुनर्मूल्यांकनः सुमित्रानंदन पन्त
- छायावाद युगः शंभुनाथ सिंह; सरस्वती मंदिर; वाराणसी,१९६२ ई
- नवजागरण और छायावाद – महेन्द्र नाथ राम,राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

धन्यवाद